PEN2PRINT®

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

उपेक्षित किन्नर समुदाय और साहित्य

सुनीता, शोधार्थी हिंदी विभाग, महर्षि विश्वविद्यालय,रोहतक

शोधसार: साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि उसका पथप्रदर्शक भी है। साहित्य के माध्यम से समाज में क्रन्तिकारी परिवर्तन सम्भव है। साहित्य के द्वारा दलित ,शोषित व उपेक्षित वर्ग को आवाज दी गई तथा उनके अधिकारों के लिए समाज को जागरूक किया गया। उदाहरण स्वरूप दलित व स्त्री प्रश्नो को साहित्य में खाशा महत्व मिला है। लकिन किन्नरों को साहित्य में जगह नहीं दी गई जबकि ये दलित और स्त्रियों से भी ज्यादा उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हैं। समाज द्वारा इन्हे भय व अजबे की द्रष्टि से देखा जाता है इनके साथ उठने बठने ,बातचीत करने में हम परहेज करते हैं। आखिर क्यों ? ये भी हमारी तरह मनुष्य हैं। इन्हें भी सम्मान के साथ जीवन जीने का हक है। समाज को इनके प्रति अपना नजरिया बदलना होगा। किन्नर रोजगार कमी और सामाजिक उपेक्षा के कारण आपराधिक प्रवृतियों में शामिल हो रहें हैं। इनकी मानसिकता और स्थिति को समझने की जरूरत है तथा साहित्य इसमें महत्वपूर्ण भमिका अदा कर सकता है.वर्ष 2016 में साहित्यकार चित्रा मुधगिल जी के उपन्यास पोस्ट बॉक्स २०३, नाला सोपारा में एक किन्नर बच्चे के जीवन की विडंबना को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है और चित्रा जी ने किन्नरों को समाज की मुख्यधारा शामिल करने का आहवान किया है. शोध पत्र किन्नर समुदाय की स्थिति को बहेतर करने में साहित्य की भूमिका का आहवान करता है

कुंजी पटल: उपेक्षित, किन्नर,परहेज,विडंबना,मार्मिक, नजरिया

भूमिका : प्रकृति में नर और नारी के अलावा एक अन्य वर्ग भी है जो न तो पूरी तरह नर होता है और न नारी। जिसे लोग हिजड़ा या किन्नर या फिर ट्रांसजेंडर कहते हैं। हिजड़ा उर्दू एंव किन्नर हिंदी भाषा का शब्द है। जिसका प्रयोग तृतीय प्रकति के लोगों के संदर्भ में किया जाता है। देश में इनकी अनुमानित संख्या सवा दो लाख से अधिक है। भारत में किन्नरों का इतिहास : देश वैदिक और पौराणिक साहित्यों में इस वर्ग को तृतीय प्रकृति अथवा नपुंसक वर्ग के रूप में सम्बोधित किया गया है। महाभारत में शिखंडी एक किन्नर ही था। मुग़ल शासन में हिजड़ों को राजदरबार में भी स्थान मिला। मुस्लिम शासकों ने हिजड़ों को खोजें के रुप में जनानखाने पर निगरानी रखने के लिए नियुक्ति की।

किन्नर समस्याएँ :- किन्नर या हिजड़ा पुरुष के रुप में जन्म लेता है लेकिन मूल रुप से उसकी लैंगिकता अलग होती। है बड़ा होते-होते वह स्त्री की भूमिका अपनाने लगता है। उसका बर्ताव,चाल-ढाल ,हाव -भाव सभी लड़कियों की तरह होने लगते हैं। उसे खुद भी इसका अहसास होने लगता है लकिन समाज की नजर में ये बातें खलने लगती है और लोग उसे चिढ़ाने लगते हैं। किन्नर न तो पूर्णत: पुरुष जीवन व्यतीत क्र पाते हैं और न ही स्त्री जीवन। यही इनके जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है। किन्नर का मन व आत्मा स्त्री की होती है,भले ही शरीर उसका की तरह हो सकता है।

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

इन्हे न चाहते हुए भी पारिवारिक विस्थापन का दंश झेलना पड़ता है सिर्फ यौन विकलांगता के कारण। चाहकर भी किन्नर अपने परिवार के सदस्यों के पास मिलने के लिए भी नहीं आ सकता। स्वयं उसका परिवार उसे इसकी अनुमति नहीं देता। किन्नर शारीरिक शोषण का भी शिकार होते रहते हैं। स्वयं लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी जो की विश्व में किन्नर के रूप में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी है वह भी बचपन से ही शारीरिक शोषण का शिकार हुई जिसकी पुष्टि उन्होंने अपनी आत्मकथा ' मैं हिजड़ा.....मैं लक्ष्मी ' में की है। इनकी शारीरिक संरचना पर भद्दे कमेंट किए जाते है। समाज हमेशा इनको शक की नजर से देखता है व इनकी समस्याओं और स्थिति को जाने बिना,बदले में सिर्फ भय और नफ़रत ही देता है। इनके साथ अछूत की तरह व्यवहार किया जाता है। घर-बार ,माँ-बाप,भाई-बहन,बच्चे कोई नहीं है जिसे ये अपना कह सके। कोई इन्हे पढ़ाना नहीं चाहता, डाक्टर इनका इलाज करने से कतराता है। समाज के इसी त्रिस्कृत व बहिस्कृत व्यवहार ने इनका जीवन इतना अभिशप्त व नरकीय बना दिया है। इनको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता पैतृक सम्पति पर इनका कोई अधिकार नहीं होता इन्हे भी रोटी कपड़ा और रहने के लिए मकान चाहिए। असल में बधाई बजन इनका प्रमुख व्यवसाय है पर अकेली बधाई से प्राप्त धन से जीवन का बसेरा नहीं हो सकता।इनके पास उत्पादनका का कोई साधन नहीं है,कोई नौकरी देता अत: जीविका चलाने के लिए ये लोग भीख मांगते है। कुछ सेक्सवर्क हैं। कुछ बार में नाचने के लिए जाते हैं। कुछ आपराधिक कृत्यों शामिल हैं।

किन्नर समस्यांए व साहित्य: साहित्य समाज दर्पण ही उसका दीपक भी है। समय और परिस्थितियों के अनुरूप प्रत्येक परिवर्तन होता है। प्रतिदिन परिवर्तित होने वाले संदर्भों को संवेदनशील साहित्यकार युग के अनुरूप अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है। साहित्य उपेक्षित व शोषित वर्गों की आवाज बना है। साहित्य के माध्यम से ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की की है। दूसरी तरफ जो किन्नर समुदाय सदियों से उपेक्षित व पीड़ित रहा है शायद दलित व स्त्रियों से भी ज्यादा ,इनको लेकर साहित्य में यदा- कदा ही लिखा गया है। के माध्यम से दलितों की समस्याओं स्त्री प्रश्नो पर काफी चर्चा हुई है। तथा इनको अधिकार दिलाने में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की की है। दूसरी तरफ जो किन्नर समुदाय सदियों से उपेक्षित व पीड़ित रहा है शायद दलित व स्त्रियों से भी ज्यादा ,इनको लेकर साहित्य यदा- कदा ही लिखा गया है। साहित्य समाज में क्रन्तिकारी परिवर्तन ला सकता है। इसलिए किन्नरों के प्रति समाज में जागरूकता लाने का दायित्व साहित्यकारों को लेना होगा अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्यकार किन्नर समस्याओं के प्रति समाज का ध्यान खींच सकते हैंतथा इनके प्रति लोगों की सोच बदली जा सकती है। ऐसी ही एक साहित्यकोशिस साहित्यकार चि दलितों की समस्याओं स्त्री प्रश्नो पर काफी चर्चा हुई है। तथा इनको अधिकार दिलाने में साहित्यत्रा मुदगिल जी ने की है। उसने एक उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं २०३ ,नाला सोपारा में की है जिसमे एक किन्नर बच्चे की पीड़ा व व्यथा को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें लेखिका ने किन्नर समस्याओं के साथ-साथ इनकी स्थिति को बहेतर करने के सुझाव भी दिए हैं। चित्रा जी ने इस उपन्यास में किन्नरों को भी उनकी गलत हरकतों के लिए लताड़ा है। तथा उनमे आत्मचेतना लाने की कोशिस भी की है। इस उपन्यास को पढ़ने के मेरी और मेरे आस-पास के लोगों की सोच भी बदली है। अत: आवश्यकता है कि साहित्य के माध्यम से इस वर्ग पर विशद चर्चा हो ताकि लोगों की सोच बदले तथा इन्हे समाज की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके। टेलीविजन के कलर्स चैंनल पर किन्नर सौम्या के जीवन पर आधारित 'शक्ति 'नाटक का प्रसारण किया जा रहा है ,जोकि सराहनीय है। इसी प्रकार

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

साहित्यकारों ने उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए समाज को और जागरूक करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१ मैं हिजड़ा .. मैं लक्ष्मी ,लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ,वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण २०१५

२ किन्नर कथा ,महेन्द्र भीष्म ,सामायिक बुक्स ,प्रथम संस्करण २०११

३ 'पोस्ट बख्स नं.२०३, नाला सोपारा,'चित्रा मुधगिल ,सामायिक पैपरबैक्स ,प्रथम संस्करण २०१६

४ **www. ssgep.com**